बच्चों! आज हम आपकी हिन्दी पाठ्य पुस्तक नवतरंग-2 का पहला पाठ पढ़ेंगे। सभी बच्चे ध्यानपूर्वक पाठ को सुनेंगे। पाठ के बीच में मैं आप से कुछ प्रश्न पूछूंगी। चलिए, पढ़ना शुरू करते हैं।

यह पाठ फूलों के बारे में है। जैसा कि आप जानते हैं कि रंग-बिरंगे फूल सबको अच्छे लगते हैं। इस कविता के माध्यम से कवि यह संदेश दे रहे हैं कि हमें परिवार की तरह ही फूलों से प्रेम करना चाहिए।

कविता के सरल अर्थ समझें -

1. बड़े सवेरे जब खिलते
बेला, गुलाब, कचनार,
मुझे बहुत प्यारा तब लगता
फूलों का संसार।

अर्थ→ कवि इन पंक्तियों में बता रहे हैं कि सुबह-सुबह जब बेला, गुलाब, और कचनार जैसे फूल खिलते हैं तो मुझे फूलों का संसार बहुत प्यारा लगता है अर्थात् चारों तरफ, खिले हुए सुंदर फूल कवि के मन को प्रसन्न करते हैं।

Scanned with ACE Scanner

विषय - हिन्दी कक्षा - दूसरी

उपविषय - फूलों का संसार टीचर - सुमन शर्मा
(कविता)

2. गेंदा, चंपा और चमेली
महकी - महकी हैं अलबेली
आँगन में आ गई अचानक
आज बसंत बहार।

अर्थ → कवि इन पंक्तियों में कह रहें हैं कि गेंदा, चंपा और चमेली आदि फूल खिल गए हैं और इनकी अनोखी खुशबू चारों तरफ फैल गई है। इनकी खुशबू से सारा वातावरण सुगंधित हो उठा है। ऐसा लगता है कि उनके आँगन में बसंत की बहार आ गई है।

बच्चो, चलिए अब पाँच मिनट की ब्रेक लेते हैं। ब्रेक में जाने से पहले मैं आप से कुछ प्रश्न पूछने जा रही हूँ जिनके उत्तर आप अपनी हिन्दी की नोट बुक में लिखेंगे। प्रश्न इस प्रकार से हैं -

प्रश्न 1. कवि इस कविता में किस के बारे में बात कर रहा है?

प्रश्न 2. कविता में आए फूलों के नाम लिखो?

प्रश्न 3. कवि के आँगन में क्या आ गई है?

बच्चो अब आप ऑडियो / वीडियो को पाँच मिनट के लिए रोक सकते हैं।

(ब्रेक का समय समाप्त)

आगे बढ़ने से पहले मैं आपको ऊपर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर बता देती हूँ।

Scanned with ACE Scanner

विषय - हिन्दी कक्षा - दूसरी

उपविषय - फूलों का संसार (कविता) टीचर - सुमन शर्मा

उत्तर 1. कवि इस कविता में फूलों के बारे में बात कर रहा है।

उत्तर 2. कविता में आए फूलों के नाम हैं— बेला, गुलाब, कचनार, गेंदा, चंपा और चमेली।

उत्तर 3. कवि के आँगन में बसंत की बहार आ गई है।

चलिए, अब कविता की अगली पंक्तियाँ पढ़ते हैं-

3. रंग-रंग के फूल खिले हैं
मुझ से तो सब हिले-मिले हैं,
फूलों की सारी बगिया है
अपना ही परिवार।

अर्थ → इन पंक्तियों में कवि बता रहे हैं कि ये जो तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल चारों तरफ खिले हैं, वे सब मुझ से हिले-मिले हैं अथवा मुझे जानते हैं और मैं इन्हें जानता हूँ। फूलों की सारी बगिया मुझे अपने परिवार जैसी लग रही है।

(कवि :- बाबूलाल शर्मा 'प्रेम')

गृहकार्य → सभी बच्चे पाठ-1 'फूलों का संसार' (कविता) अवश्य पढ़ेंगे ताकि शब्दों का उच्चारण सही हो सके।

नोट → अभिभावकों से निवेदन है कि बच्चों को अपने पास बिठाकर यह पाठ पढ़ाएँ तथा कविता की पंक्तियों के अर्थ समझाएँ। कविता के अर्थ समझने के लिए हैं। इसे नोटबुक पर नहीं लिखना। बच्चों से पाठ की reading अवश्य करवाएँ।

धन्यवाद।

(Last Page)

Scanned with ACE Scanner